मधुबन ओम् शान्ति अंक 331 फरवरी 2020

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(16-01-2020)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा सर्व खजानों को सफल कर सफलता भव की वरदानी आत्मायें, सदा अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा विश्व परिवर्तन की महान सेवा में सकाश देने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबने अपने अति प्यारे ब्रह्मा बाबा के इस स्मृति मास में डबल लाइट स्थिति में स्थित रह अव्यक्त वतन की सैर करते हुए स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने के लिए खूब तपस्या की। चारों ओर के बहुत सुन्दर समाचार मिल रहे हैं। कई स्थानों पर अखण्ड योग भट्ठियों में बहुत अच्छी लगन के साथ सभी ने योग अभ्यास किया। अभी फिर फरवरी मास में शिव भोलानाथ बाप के अवतरण का यादगार विशेष शिव जयन्ती का पावन पर्व सभी खूब उमंग-उत्साह से शिवबाबा का ध्वज फहराते, प्रतिज्ञायें करते, प्रभातफेरियां निकालते, अनेकानेक सेवाओं के साथ मनायेंगे। अभी यह 84 वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती है, तो जरूर आप सभी कोई न कोई नवीनता सम्पन्न ऐसी विशेष सेवायें करेंगे जो चारों ओर वाह बाबा वाह के गीत बजने लगे। पहले प्रत्यक्षता हो फिर परिवर्तन। बोलो, ऐसा शुभ संकल्प आता है ना!

कभी कभी मैं अपने आपसे पूछती हूँ भगवान तू मुझे मिला, तूने इतना सब कुछ दिया, मैं आपको क्या दूँ! मेरा ज्ञान सूर्य बाप, फिर मेरी माँ ब्रह्मा और हम लक्की स्टार चमकते हुए सितारे, सभी ऊपर रहते हैं रोशनी देते हैं। सारी विश्व को सकाश दे रहे हैं। हम धरती के चैतन्य सितारे भी ऐसी सेवा करते हैं!

पहले-पहले एक बहुत अच्छा गीत बना था – हमने देखा हमने पाया शिव भोला भगवान... तो बाबा ने कहा यह राँग है। हमने देखा नहीं, हमने जाना हमने पाया, पहले जाना तब पाया शिव भोला भगवान। कितना भोला है, जितना ही भोला है, उतना लवफुल के साथ लॉफुल भी है। जो जैसा कर्म करेगा वैसा पायेगा। प्यार भी बहुत करता है, इशारे भी देता है। कहता है सजा मैं नहीं देता हूँ, जो भी कर्म करते हो तुम ही भोगते हो। उस घड़ी बाबा का रूप कैसा होता, यह मैंने प्रैक्टिकली आँखों से देखा है।

आजकल कईयों को यह बात जंचती है कि जैसे बाबा असोचता, अभोक्ता, अकर्ता है, ऐसे हमें भी उसी स्थिति का अनुभव करना है। सोचो नहीं। कई कहते हैं कुछ तो सोचना पड़ेगा! मैं कहती हूँ कोई जरुरत नहीं है। अरे! प्रभु तेरी लीला चल रही है... सब कुछ करके अपने आप छिपाया... कहाँ पाण्डव भवन इतना छोटा। फिर ओम् शान्ति भवन बना, वह भी छोटा पड़ गया। फिर इतना बड़ा शान्तिवन/डायमण्ड हॉल बना। यह सब किसकी लीला है? प्रभु लीला है ना। इसमें कईयों का भाग्य बना होगा। कईयों को भाग्य बनाने की बहुत अच्छी कला आ जाती है। कोई बड़े हो गये हैं, तो न करते हैं, न कराते हैं। बूढे हो गये हैं। पर कोई बाबा के बनते जन्मते ही सफल कर रहे हैं, करा रहे हैं। भण्डारे को जो भरने वाले हैं, उनका कितना भाग्य है। जिसका यज्ञ के भण्डारे से प्यार है ना, उसका भण्डारा भरपूर है। शिवबाबा का भण्डारा और ब्रह्मा बाबा की तो कमाल है, अपने हाथों से ब्रह्मा भोजन खिलाता है, मुख से ज्ञान रत्न सुनाता है। साक्षी होकर देखो तन-मन-धन और सम्बन्ध... चारों सफल हुए हैं! जो एक्यूरेट ट्रस्टी होकर रहते हैं, सेवा भावना से सब कुछ सफल करते हैं उन्हें सबकी दुआयें मिलती हैं। अब समय कहता है कि कुछ भी व्यर्थ न जाये। तो मीठे बाबा ने मुरलियों में जो सुनाया समझाया है, वह सब इन आँखों ने देखा है। मैं तो हर पल बाबा के गुण गाती हूँ, बाबा कैसे गुप्त रीति से इतनी बड़ी स्थापना का कार्य कर रहे हैं! हम बच्चों से तो खेल कराते हैं। बोलो, ऐसे सदा खेल खेलते, खुशियों में नाचते, बेफिकर बादशाह बन उड़ती कला में उड़ रहे हो ना!

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

“विशेष 84वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती निमित्त”

1) अब पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम की प्रालब्ध का अनुभव करो, दुआयें देना और लेना सीखो। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना – यह है दुआयें लेना और दुआयें देना। यह दुआयें सहज ही मायाजीत बना देंगी।

2) सदा दो स्लोगन याद रहें - 1- जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे। 2- हुक्मी हुक्म चला रहा है और हम निमित्त बन चल रहे हैं।

3) अभी अपनी श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा पावरफुल वायब्रेशन फैलाने की सेवा करो क्योंकि अभी वाणी कम काम करती है, दिल का सहयोग, दिल के वायब्रेशन बहुत जल्दी काम करते हैं।

4) अब साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। सभी ब्राह्मणों में यह शक्ति है, सिर्फ इस शक्ति को मन से, तन से इमर्ज करो तो बहुत कमाल कर सकते हो।

5) जो भी दिल के उमंग-उत्साह से अच्छे-अच्छे संकल्प उत्पन्न होते हैं उन्हें प्रैक्टिकल में लाने के लिए समाने की शक्ति और कल्याण की भावना को इमर्ज करो। जो संकल्प करते हो उस पर अविनाशी गवर्मेन्ट की अविनाशी स्टैम्प लगाओ।

6) अब अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ तो आपका पुरुषार्थ स्वत: ही जमा होता जायेगा। अभी सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। सबको नि:स्वार्थ सहयोग और सकाश देने की लहर फैलाओ।

7) परमात्म प्यार आनंदमय झूला है, इस सुखदाई झूले में झूलते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो कोई भी परिस्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती।

8) बापदादा सभी बच्चों से यही शुभ आश रखते हैं कि अब बीती सो बीती कर, निगेटिव और वेस्ट दृष्टिकोण को समाप्त कर दो, कोई की भी व्यर्थ बातें मन और बुद्धि में धारण न हों, अवाइड करो और बापदादा से अवार्ड लो।

9) समय की समीपता के कारण नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे लेकिन कितने भी काले बादल आयें, आप अपनी उड़ती कला की स्टेज पर स्थित रहना तो गहरे काले बादल भी बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हो जायेंगे।

10) कोई कैसा भी हो आप दिल से सबको स्नेह और शुभ भावना दो, रहम करो। निर्माण बन सबको आगे बढ़ाओ। कारण रूपी निगेटिव को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ। घबराओ नहीं, माया से निर्भय बनो।

11) कभी किसी को यह सर्टीफिकेट नहीं दो कि “यह तो बदलना ही मुश्किल है”। अगर आपसे परिवर्तन नहीं होता है तो निमित्त आत्माओं तक पहुंचाना - यह आपका फ़र्ज है। फिर खुद लॉ हाथ में नहीं उठाओ।

12) बाप की पालना का रिटर्न है - बाप समान बनकर पालना देना। स्वयं को परिवर्तन कर, स्व-परिवर्तन से सम्बन्ध-सम्पर्क में परिवर्तन लाने के जिम्मेवार, सहयोगी बनो। स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन बनाओ तब विश्व सेवा में सकाश मिल सकेगी।

13) सदा याद रखना कि मुझे बदलना है, मुझे बिगड़ी को बनाना है, दूसरा बिगाड़े, मेरा काम है बनाना। जैसे वह बिगाड़ने में होशियार है, ऐसे आप अपने काम में होशियार बनो।

14) बापदादा सभी बच्चों को सिर्फ एक छोटा सा स्लोगन दे रहे हैं – “सफल करो - सफलता पाओ”। जो भी आपके पास प्रापर्टी है - समय, संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सबमें मैं पन से न्यारे होकर सच्ची दिल से सफल करो, इन्हें व्यर्थ न गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो।

15) हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो - हर कर्म, हर संकल्प बधाई वाला हो। जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश मिठाई खिलाते, सदा खुशी में मन से नाचते रहना और सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहना।

16) यदि समान बनने की तीव्र इच्छा है तो सदा स्नेह के सागर में समा जाओ। यह स्नेह की शक्ति सब कुछ भुला देती है। स्नेह मेहनत से मुक्त बना देता है। स्नेह छत्रछाया बन मायाजीत बना देता है इसलिए और कोई पुरुषार्थ नहीं करो सिर्फ स्नेह के सागर में समाये रहो।

17) अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा, लेकिन बापदादा चाहते हैं कि बच्चों का शिक्षक

समय नहीं बनें। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ।

18) जैसे साकार में ब्रह्मा बाप ने सर्व प्राप्ति के साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। ऐसे सूक्ष्म सोने की जंजीरों के जो लगाव हैं उनसे भी मुक्त बनो। फालो फादर करो।

19) जो सोचते हो, जो कहते हो, अनादि, आदिकाल का जो स्वरूप है उसे इमर्ज करो और हर बात का स्वरूप बनते जाओ। जो सोचो वह स्वरूप अनुभव करो। अनुभवी मूर्त बनो।

20) अब कमजोर बोल से भी मुक्त बनो। हर बोल मधुर, बाप समान, सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना के बोल हीरे मोती के समान युक्तियुक्त हों। कुछ समय अन्तर्मुखता का मौन, मन और मुख का मौन रखने का प्रोग्राम बनाओ। मन के व्यर्थ का ट्रैफिक कन्ट्रोल करो। ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का बीच-बीच में दिन मुकरर करो।

21) अभी समय के टू लेट की घण्टी बजने वाली है। अचानक ही आउट होगा - टू लेट। फिर कितना भी चाहो समय नहीं मिलेगा, इसलिए बापदादा इशारा दे रहा है - जमा करो, जमा करो, जमा करो। बापदादा के राइट हैण्ड बनकर रहो। हिम्मतवान, विघ्न-विनाशक बनकर रहो। हैण्ड्स बनो, हेडक नहीं।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 19-03-15 *मधुबन*

"जो निश्चयबुद्धि विजयन्ती है वह व्यर्थ से मुक्त है, उनमें जरा भी देह अभिमान नहीं रह सकता"

दादी जानकी

साइलेंस में बैठके मुख से ओम् शान्ति उच्चारण करना कितना अच्छा लग रहा है! क्योंकि प्रैक्टिकल है। सीधा ही ओम् शान्ति बोलो तो अन्दर से मैं मेरा की जो 63 जन्मों की आदत पड़ी हुई है, वो एक धक से छोड़ देना और ओम् शान्ति में टिक के ओम् शान्ति, ओम् शान्ति कहना इससे लाइट माइट आ जाती है। जिससे बोल चाल सब बदल जाता है। सभी थोड़ा-सा भले पास्ट में जाओ, प्रेजेन्ट में कहाँ हो, जरा अपने आपको देखो। मुझे तो निर्वाणधाम में रहना है, वाणी में क्या आयें! जो बाबा ने महावाक्य उच्चारण किये वो दिल में समाये, वो धारणा में आये, वह जीवन आप सबके सामने है।

शिवबाबा ने कैसे इस ब्रह्मा तन को ले करके हमको अपना बनाया है। सिर्फ एक सम्बन्ध से नहीं, माता-पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरू सब सम्बन्ध एक से हैं। सतयुग में भी लौकिक बाप होगा, कलियुग में भी होगा। लौकिक बाप तो सदा होगा पर उसमें सर्व सम्बन्ध होवे, वो अभी एक ही बार होता है। अभी यह वन्डरफुल बात है, इसके लिए क्लास नहीं चाहिए, प्रैक्टिकल करना है। जब करके दूसरे को सुनायेंगे तो वो प्रैक्टिकल कर पायेंगे। थोड़ा भी देह-अभिमान है तो उसका जो बोझा है वो भारी कर देता है। तो बताओ सारा बोझा उतारके हल्के बने हैं? हल्के माना पंख आ गये हैं, इतना फर्क पड़ गया! अभी एक बारी हंस बगुला दोनों को सामने लाओ और देखो अच्छी तरह से, हंस कैसा होता है, बगुला कैसा होता है? यहाँ तो बगुले वा हंस की बात नहीं है। यहाँ सभी हंस हैं, यह है हंस मण्डली इससे कितना अच्छा वायुमण्डल बना हुआ है।

अभी ऐसा अनुभव करो जैसे त्याग और तपस्या की मूर्ति बन गये। एक है योग, दूसरी है तपस्या, तीसरी है याद की यात्रा। योग का बल है, फिर याद किसको करें और कौन करे? आत्मा को परमात्मा की पहचान आने से याद आती है। जानना, मानना, पहचानना इससे बहुत प्राप्ति है। इसमें गुप्त कोई छिपे हुए पाप हैं ना वो कट जाते हैं। फिर जब ऐसे पाप कटते हैं ना तो लगता है आत्मा स्वच्छ हो गई, अच्छे कर्म करने के लिए ऑटोमेटिक वो शक्ति काम करती है। आत्मा में योग से बाबा की याद का बल आया है। मैं बाबा का शुक्रिया मानती हूँ क्योंकि जब हम कहते हैं मेरा बाबा, मीठा बाबा,

प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। अभी हमारे से कोई गलत काम तो नहीं होता है! अच्छे काम ऑटोमेटिक हो रहे हैं। और बड़ा फायदा यह है जो और भी करने लग पड़ते हैं। अगर मैं करूँ तो मेरे लिये तो फायदा है, परन्तु ऐसे करूँ जो सब करने लग पड़े। आगे हम बाबा को देख करके जो पढ़ते थे, दिल को लगता था, पर हम भी ऐसे करेंगे इतनी उम्मीदें नहीं थी। बाबा में वो ईश्वरीय आकर्षण जो थी, उसने आत्मा को देही-अभिमानी बनने में बहुत मदद की है। सिर्फ कॉन्सेस की बात है।

मन, बुद्धि, चित्त और संस्कार...इसमें क्या फर्क है? मन शान्त हो गया है, जहाँ हमारा मन होगा वहाँ हमारा तन और धन होगा। पहले-पहले जब ज्ञान मिलता है तो मन शान्त होना सीखता है, फिर खुशी होती है। जब मन बुद्धि के अन्तर का इतना पता नहीं होता है तो मन भटकता भी है, लटकता भी है तो कहाँ चटकता भी है। जैसे छोटी बेबी, परन्तु ज्ञान मिलने से तो ज्ञान ऐसा है ओम् शान्ति का ही ज्ञान आ जाये, पहले तो मैं आत्मा शान्त हूँ, तो आत्मा को शान्ति का अनुभव होने लगता है। फिर और ज्ञान मिलता है तो बुद्धि काम करती है। बुद्धि को जैसेकि आत्मा का परिचय मिला ना तो बुद्धि ने चिंतन किया तो मन ने भटकना छोड़ दिया। बुद्धि में अच्छा विचार करने की ताकत आई। फिर योग लगाओ तो बल आया। तो ज्ञान की सच्चाई जब चित्त के अन्दर घुस जाती है, यह सच है... न सिर्फ चिंतन तक है पर चित्त तक है। सत् चित्त आनंद स्वरूप है। समझा, चिंतन में मन कभी किसी की कमियों में भी चला जाता है, कभी संशय भी आ सकता है। बाबा कहता है निश्चय बुद्धि विजयंती। ऐसा खुद में भी निश्चय है, बुद्धि में भी निश्चय है, नॉलेज में भी निश्चय है। व्यर्थ संकल्पों को नॉट एलाऊ। आते ही नहीं हैं। तो कौन है जो व्यर्थ से फ्री है?

जो बाबा कहते तुम बच्चों को जो समझाता हूँ, वो औरों को समझाओ, सेवा करो। तो ऐसी सच्चे दिल से सेवा करने वाले बाबा के दिल में बैठ जाते हैं। बाबा आजकल मुरली में यही कहते हैं वो बाबा के दिल में है, जिसके चिंतन में एक ही बाबा है। अभी मेरे को कई पूछते हैं दादी यह याद है? अरे भाई, मुझे याद नहीं है ना, क्या करें! अनादि बना बनाया ड्रामा है, कोई चेंज नहीं होता है। जो बना हुआ होता है उसको चेंज नहीं किया जा सकता है। तो बाप समान बनो ना! यह संगमयुग है, हरेक कल्प में संगमयुग पर, एक ही बार पारलौकिक बाप मिलता है, उसको अपना शरीर नहीं है, इस शरीर का आधार लेता है। ऐसे कभी हुआ है सारे कल्प में? देखो, कल्प में एक ही बारी होता है। हम कहेंगे मेरा बाबा है, वो कहेगा तुम मेरे बच्चे हो।

माला जो बनती है 108 की, तो एक बार बाबा ने कहा नहीं बच्ची, माला सिर्फ 8 की होती है। तो मैंने कहा वो 8 कौन हैं? तो कहता है कि नहीं बताऊंगा। क्यों? वो एकदम बाप समान होंगे। हो सकता है अभी भी कोई अष्ट में आ जावे क्योंकि अष्ट समान होंगे यानी बाप समान बनेंगे। गुल्जार दादी को पूछती हूँ तो कहती आप तो आयेंगी ना, यह कह करके मुस्कराती है। निश्चय के बल से जो सम्पूर्ण बनने में समीप आते जाते, औरों को निश्चय बुद्धि बनाते जाते सेवा करते रहते वह अष्ट में आ जायेंगे। मैं समझती हूँ स्पष्ट और सरल रूप से बातें ऐसी मिली हैं, जो याद योग से बल मिलता है, फिर बुद्धि याद करने के लिए भटकती नहीं है। हमारे कन्ट्रोल में है। जब बुद्धि कन्ट्रोल में होती है तो बहुत खुशी होती है। अन्दर से खुशी आ रही है।

क्या होता है भारत में जो सतीव्रत वाली होती हैं, जिससे शादी किया ना उससे सतीव्रत में रहती हैं। असुल कोई आदमी के तरफ दृष्टि नहीं जायेगी। उस पति पत्नि का सच्चा प्यार होता है, दुनिया में ऐसे भी कोई विरले ही होते हैं। ऐसे बाबा का भी ऐसे बच्चों से बहुत प्यार होता है। क्योंकि वह तृप्त आत्मायें होती हैं, कुछ कमी नहीं होती है। उसको कोई भय नहीं होता है। कोई डाउट नहीं उठता है।

आजकल मुरली के वरदान पढ़ो ना, वह तो वन्डरफुल होते हैं। जिनका पढ़ाई से प्यार है, यह अन्तिम जन्म की अन्तिम घड़ियों में पढ़ाई में ध्यान रखने में बहुत कमाई है इसलिए बुद्धि ऐसी है, कुछ बात याद नहीं, कोई कल की बात भी याद नहीं क्योंकि आने वाली बातें इससे भी अच्छी हैं और वो आ रही हैं, यह दृढ़ संकल्प हो। 5 अंगुलियों में से कोई एक भी सहयोग न देवे, तो कैसे काम चलेगा, अकेला हाथ वा एक अंगुली से क्या होगा! कुछ नहीं कर सकते। सिम्पल बात है, सिम्पल ज्ञान है कि मिलाके कैसे चलें? एक दो के सहयोगी कैसे बनें, एक दो के साथ कैसे मिलके चलें, जो यह समझेंगे वह अष्ट में आ जायेंगे। बोलो, कौन आयेगा अष्ट में? मुझे लिख करके देना। अपने में ऐसी दृढ़ता के साथ उम्मीद रखो तो हो जायेगा क्योंकि उसमें हिम्मते बच्चे मददे बाप, यह गैरेंटी है। सच्ची दिल से साहेब राजी, नियत साफ, अन्दर में जरा भी शक्य नहीं तो मुराद हांसिल हो जाती है। ओम् शान्ति।

“पुरुषार्थ में टेन्शन फ्री रह अटेन्शन रखो अन्दर जरा भी रजो तमो न हो, मुझे सतोप्रधान बनना ही है”

अभी सभी दिल से प्रेम से ऐसा ओम् शान्ति बोलो, जो मैं और मेरा चेंज हो जाए। जब बॉडी-कॉन्सेस है तो मैं कहने से कैसा लगता है और मेरा कहती हूँ तो कैसा लगता है! और जब सोल-कॉन्सेस हैं मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की हूँ तो चेंज हो जाता है। परमपिता परमात्मा जो सभी का माता भी है, पिता भी है, फिर शिक्षक, सखा और सतगुरु भी है, यह पाँच सम्बन्ध याद रखो। कोई सम्बन्ध कम तो नहीं है, यह चेक करो। एक माता के सम्बन्ध को देखो तो कितना सुख पाते हैं, ऐसे ही एक एक सम्बन्ध का अनुभव करो। माँ के बिगर बच्चा बिचारा हो जाता इसलिए माँ दूध पिलाती, माँ गोद बिठाती, माँ गले लगाती, माँ नयनों पर बिठाती। सबकी नज़रों में अच्छा बच्चा बन जाए इस भावना से पालना करती।

आज की मुरली में बाबा ने कहा बाप और वर्सा यह दो शब्द याद रखो। पहले माँ फिर बाप, तो वर्सा मिला है। केवल शान्ति नहीं पर उसके साथ प्रेम भी मिला है। बाबा ने पहले शान्ति दिया है फिर प्रेम दिया है फिर न्यारा और प्यारा बना दिया है। डिटैच और लविंग यह अपनी नेचर बना दिया है। यही नेचर है ना सभी की? क्योंकि व्यक्ति, वस्तु किसी में जरा भी अटैचमेंट है तो वो सच्चा नहीं है इसलिए इसकी अच्छी रीति चेकिंग करके चार्ट रखना।

भले सतयुग से लेके कलियुग अन्त तक अलग-अलग माँ बाप मिलेंगे लेकिन ऐसा माँ बाप कहाँ मिलेंगे! हमारी पहले कौड़ी तुल्य वैल्यु थी, अभी बाबा ने क्या से क्या बनाया है! कौड़ी से हीरे तुल्य बना दिया। थोड़ी भी कोई अच्छी चीज़ मिली चलो काम, क्रोध के लिए समझा कि यह खराब है, जैसे काम महान शत्रु है परन्तु थोड़ा भी क्रोध हो तो वो भी कम नहीं है फिर उसको लव की वैल्यु का पता नहीं पड़ेगा। लव की बहुत वैल्यु होती है। लव को हार्ट की निशानी दिखाते हैं।

ईश्वरीय रूहानी स्नेह है तो दृष्टि वृत्ति में त्रिनेत्री हैं, हम सब आत्मायें हैं, सभी देखो अपने को कि हम सब आत्मायें हैं। आत्मायें परमात्मा की सन्तान हैं, संगमयुगी ब्राह्मण हैं फरिश्ता बनने के लिए सभी इस धरती पर निमित्त मात्र सेवारत हैं। तमोप्रधान सृष्टि को सतोप्रधान बना रहे हैं। उसके पहले स्वयं को सतोप्रधान बना रहे हैं। इस पुरुषार्थ में टेन्शन फ्री हैं, पर यह अटेन्शन खूब है कि जरा भी रजो तमो का संस्कार न हो, जरा भी लोभ मोह न हो। थोड़ा भी लोभ मोह है तो त्यागी तपस्वी नहीं कहलायेंगे। हमको तो त्यागी तपस्वी सेवाधारी होके रहना है। मैं सभी को साक्षी हो करके देख रही हूँ। जो केयरलेस हैं उन्हें ऐसे छोड़ती नहीं हूँ, उनसे भी शेयर करने के बिगर रह नहीं सकती हूँ, पीछे पड़ती हूँ। शेयर भी करती हूँ इन्सपायर करने के लिए क्योंकि हिम्मते बच्चे मददे बाप का खेल देखा है। सारी लाइफ में इस एक ही गुण ने (हिम्मत के गुण ने) बहुत मदद की है इसलिए कभी हिम्मत नहीं छोड़ी है।

कल्प पहले किया है, अभी सिर्फ फॉलो फादर है। जैसे मेरा बाबा सत्यता, पवित्रता, नम्रता, धैर्यता और मधुरता में सम्पन्न है, भरपूर है। कभी भी बाबा ऐसे कुछ बोल देवे, कभी नहीं होगा। नम्रता तो बेहद है। अभिमान का तो नाम-निशान नहीं है। तो राय देती हूँ बहुत अच्छा होगा फॉलो फादर करो। कौन-से फादर को फॉलो करो? जहाँ देखो वहाँ बाबा के बड़े बड़े फोटो देखने को मिलते हैं। कमाल है बाबा की। तो हमारी वृत्ति दृष्टि स्मृति में एक बाबा दूसरा न कोई। दूसरा सभी आत्मायें बाबा के बच्चे हैं, कल्प पहले वाले हैं। अभी यह सब सतयुग बनाने में प्रैक्टिकल पार्ट बजा रहे हैं, तभी सतयुगी दुनिया आयेगी। निर्वाणधाम, परमधाम में जाना है और सूक्ष्मवतन वासी होकर रहना है यह हमारी भावना सभी स्वीकार करें। अच्छा – ओम् शान्ति।

"सदा श्रीमत पर चलने वाले जो मनमत परमत के अधीन नहीं है, वे सदा सुखी हैं"

ड्रामा अनुसार हरेक का पार्ट अपना-अपना है, परन्तु यह न्यारा और प्यारा अनुभव सभी ने किया होगा! मेरे ख्याल में सबकी वीकनेस चली गई होगी। कोई को अपना थोड़ा-सा स्वभाव सन्तुष्ट रहने नहीं देता है या मेरे संग में सब सन्तुष्ट रहें यह वीकनेस कोई कोई आत्माओं में होंगी, वो खलास हो गई होगी। किसी में कोई ऐसी वीकनेस है जिससे मैं कहूँ मेरे में सहनशक्ति कम है, मैं नहीं सहन कर सकती हूँ, ऐसी वीकनेस चली गई है ना। साक्षी हो करके अपने को देखो, सभी एक समान नहीं हो सकते हैं, यह मैं जानती हूँ। हरेक का पार्ट अपना है परन्तु बाबा का बनने से बहुत सुख मिला है, बहुत कुछ सीखा है वह मुख से वर्णन नहीं कर सकते हैं लेकिन वो जो अनुभव है वह सेवा करा रहा है।

अभी हम सबका एक ही बाप है, सारे कल्प में ऐसे नहीं होगा। हम सबका एक ही बाप हो, माँ भी वही, बाप भी वही, टीचर भी वही, सखा भी वही, फिर सतगुरू भी वही, इसलिए श्रीमत सिर माथे पर है। मनमत परमत के अधीन नहीं हूँ। एक बाबा की श्रीमत पर चलने वाले कितने सुखी हैं और औरों को भी सुख दे रहे हैं। उनको कभी भी दु:ख का नाम-निशान नहीं है। दु:ख हर्ता बन गये। जहाँ सुख है वहाँ शान्ति और प्रेम है। जहाँ प्रेम है वहाँ सच्चाई है। ऊपर ऊपर नहीं अन्दर से है। जी चाहता है, ऐसा वायब्रेशन वायुमण्डल बनें, जहाँ हम आत्मा हाज़िर हैं, वहाँ बाबा मेरा साथी है और साक्षी हो करके पार्ट प्ले करने का वरदान मिला हुआ है। सतयुग में जीवनमुक्ति नेचुरल होगी पर अभी मनमत परमत से मुक्ति है और श्रीमत से जीवनमुक्ति है, यह वर्सा मिला है।

जब से डबल फॉरेनर्स पैदा हुए हैं तब से ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन के स्थान की शोभा बढ़ रही है। ऐसे है? साकार बाबा के होते ओम शान्ति भवन भी नहीं था। सिर्फ हिस्ट्री हॉल था।

अभी आवाज में आने में, क्या बोलूँ... बाबा कहते हैं अभी आपकी त्याग वृत्ति, तपस्वी मूर्त से सेवा चलती रहे। किसी ने कहा त्याग वृत्ति तभी होगी जब वैराग वृत्ति होगी। मैंने कहा किसका वैराग? 5 तत्वों वाली दुनिया का। अच्छा लगता है वृत्ति अनासक्त है। आत्म-अभिमानी स्थिति में रहना है और स्व-दर्शन चक्रधारी बनना है। चक्र का ज्ञान वन्डरफुल है। सीढ़ी के ज्ञान को तो कहेंगे जैसे लिफ्ट मिली है क्योंकि धीरे धीरे ऊपर जाने से श्वांस चढ़ता है इसलिए लिफ्ट मिली है, बस पाँव रखो ऊपर पहुँच जाओ। चक्र का ज्ञान बाबा ने ऐसा दिया है जो स्वदर्शन चक्रधारी बन गये, मनमनाभव का मंत्र भी वन्डरफुल है।

यह जो संगमयुग का टाइम है इसकी बहुत वैल्यु है। बाबा हमारे साथ है तो साथ का जो सहयोग है औरों को मिलता है। गायन है अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। यह नहीं कहते हैं ब्रह्माकुमारियों से पूछो, गोप-गोपी को अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है क्योंकि इन्द्रियों के वश नहीं है। यह जो कर्मेन्द्रियों हैं - कान, आँख, नाक, मुख यह कभी उदासी का अनुभव न करें।

मुझे याद है बाबा ने जब बॉम्बे में सेवा शुरू कराई तो 3 बन्दरों के ऊपर बहुत अच्छी-अच्छी मुरलियाँ चलाता था। अभी थींक नो इविल, यह भी चौथा होना चाहिए। तो बाबा के संग से बाबा को देखो, हमारा सोचना ही बदल गया। तो सच्चा पुरुषार्थ वो है जो बोलना कम, पर भावना की ऐसी सेवा है जो हर एक वन्डर खाए। तो सेवा और याद, याद हो तो कैसी, जो और कोई बात याद नहीं आती सिवाए बाबा के क्योंकि योग से कनेक्शन है तो बल मिलता है और सेवा से दुआयें मिलती हैं। चलाने वाला बाबा चला रहा है, करावनहार करा रहा है। करता वो है परन्तु हम कहते हैं हमारे से निमित्त कराता है। निमित्त रखने का भाग्य मिला है। तो यहाँ है भाग्य, यहाँ है भगवान। भगवान का बल मिल रहा है, भाग्य से सेवा हो रही है और क्या करना है! कुछ नहीं करना है, जिसका हृदय शुद्ध है तो वो शब्दों के अर्थ को भी समझ जाते हैं।

मैं कहती हूँ शरीर को कैसे बाबा चला रहा है! बाबा चला रहा है या इन्हों का प्रेम चला रहा है? ईश्वरीय परिवार का जो प्यार है, मैं समझती हूँ यह भी कमाल का काम करता है, शक्ति आ जाती है। अच्छा अभी अच्छी तरह से 5 मिनट साइलेंस में बैठो, फिर जो ड्रामा में कल करना होगा, हुआ ही पड़ा है सो होगा, जो कल हुआ सो अच्छा हुआ, पर याद नहीं है क्या हुआ? आप लोगों ने बर्थ डे मनाया मुझे कहा तुम खुश हुई? मैंने कहा खर्चा फालतू नहीं किया इसलिए मैं बहुत खुश हूँ। नहीं तो क्या-क्या पहनाते हैं वो सब कुछ नहीं किया सिर्फ ऐसे बैठी इसलिए मैं खुश हुई। सबका मुखड़ा देखती रही। एकानामी और एकनामी चलने से हमारी लाइफ बहुत अच्छी रहेगी। कभी भी फालतू खर्च नहीं किया। एक गुलाब का फूल कितना खुशी देता है। आजकल हमारे कमरे में एक भाई गुलाब के फूलों की थाली रखके जाता है, तो जो आता है वो फूल देती रहती हूँ और बाबा तो कहते टोली खाओ, मुरली सुनो, होली बनो। बस, और कुछ नहीं चाहिए। ओके, ओम् शान्ति।

“ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न, सम्पूर्ण और समान कैसे बनें?”

गुल्जार दादी

बाबा को हम सदैव अपने सामने लाते रहें, बाबा की मूर्त में ही सम्पन्नता दिखाई दी। उसकी निशानी यह है कि स्वयं अशरीरी स्थिति में रहते थे। जब बाबा झोपड़ी में बैठते थे तो जब भी कोई बाबा के सामने जाता था तो बाबा की दृष्टि मिलते ही उनको पूछना भूल जाता था। एकदम बाबा की मूर्त से अशरीरीपन का अभ्यास ऑटोमेटिकली हो जाता था। तो साकार बाबा के सामने जाने से ही जो पूछना कहना होता था वो एकदम भुला करके ऐसे साइलेंस में अशरीरी स्टेज पर ले जाता था। यह प्रैक्टिकल अनुभव हम सभी ने किया है।

तो ज्ञान, शक्तियाँ और गुण तो हैं ही हमारा खजाना लेकिन चौथा बाबा ने अटेन्शन दिलाया है – सबसे बड़ा खजाना है समय का। यह जो संगम का समय है - यह सबसे बड़ा खजाना है क्योंकि कोई भी प्राप्ति, कोई भी कर्म समय अनुसार ही होती है। सुबह से लेकर हमारी जो भी दिनचर्या चलती है, वो समय के आधार पर चलती है। तो अगर समय के खजाने को सही रीति से विधिपूर्वक हम कार्य में लगाते हैं, तो हमारा सारे कल्प का भविष्य निश्चित हो ही जाता है क्योंकि यह संगम का समय, एक सेकण्ड 5 हजार वर्ष की प्रालब्ध का आधार है और कोई भी युग में हमारी प्रालब्ध नहीं बन सकती है। यही संगम का समय है जिसमें हमारी चढ़ती कला होती है। तो संगम समय पर राज्य-अधिकारी बनने से भविष्य में भी राज्य अधिकार निश्चित है ही फिर भक्तिकाल में पूज्य भी जरूर बनना ही है। भले द्वापर से गिरना शुरू करते हैं लेकिन हमारा पूज्य रूप तो कायम होता है। हम सब पूज्य जरूर बनने वाले हैं लेकिन जैसे यहाँ पुरुषार्थ में नम्बर हैं वैसे पूज्य में भी नम्बर हैं।

किसी-किसी बड़े-बड़े मन्दिरों में रोज़ हर कर्म का यादगार पूज्य के रूप में विधिपूर्वक पूजा जाता है और कहीं-कहीं ऐसा नहीं होता है। मन्दिरों में भी फ़र्क है। यह सारा फ़र्क इस संगम समय के पुरुषार्थ और प्राप्ति के ऊपर है। तो हमको देखना है कि सबसे बड़ा खज़ानों का आधार जो समय का खज़ाना है उसको हम कितना और कैसे यूज़ करते हैं? क्योंकि बाबा का है कि अब नहीं तो कब नहीं का पाठ पक्का करना है। एक सेकण्ड में कुछ भी हो सकता है, अचानक होगा तब तो माला में नम्बरवार होंगे। तो अचानक होना है, उसके कारण बाबा कहता है – संगम के एक-एक सेकण्ड का अटेन्शन हो। ऐसे ही साधारण रूप में इसे न गँवायें। समय का बहुत ध्यान रखना है इसके लिए अटेन्शन बहुत रखना पड़ेगा। ऐसे ही साधारण रीति से हमारा दिन बीता तो वहाँ भी साधारण ही बनना पड़ेगा। तो अपनी लगन में मगन और अपनी कमाई जमा करने में मस्त रहें।

ज्ञान माना यह नहीं कि सिर्फ हमने समझ लिया फिर भी बाबा कहते ज्ञानी तो बने लेकिन अभी पॉवरफुल नहीं बने हैं। बाबा से प्यार का सर्टिफिकेट तो हम सबने ले लिया, प्यार नहीं होता तो छोड़के आते क्यों? इसलिए प्यार में तो पास हैं। हम कोर्स करा सकते हैं, बड़ी-बड़ी जगहों पर भाषण कर सकते हैं, बुद्धि में सारी नॉलेज है रचता रचना की, लेकिन ज्ञान माना समझ। ज्ञान का अर्थ ही है समझ। तो समझ सिर्फ बोलना, ज्ञान वर्णन करना नहीं है। समझ हर कर्म में चाहिए, मानो हम संकल्प करते हैं उसमें भी समझ चाहिए – राइट है या राँग है। हम फालतू को ही बढ़ाते रहते हैं, तो यह ज्ञान है क्या? समझ है क्या? तो सोच-समझ के काम करना है इसको कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा। ज्ञान, गुण और शक्तियाँ... इसके लिए भी बाबा ने खास यह इशारा दिया है कि समय अनुसार, समस्या अनुसार जिस शक्ति की आवश्यकता है वो काम में आ जावे। तो ज्ञानी माना हर संकल्प, हर कर्म सोच समझकर करें। अगर समझ के आधार पर हम काम करेंगे तो हमारे कर्म कभी भी विकर्म नहीं होंगे, सुकर्म ही होते रहेंगे।

ऐसे ही योग की शक्ति के स्वरूप का भी हमें चेक करना चाहिए कि जब भी हम योग में बैठते हैं तो योग माना हमारा मन उसमें एकाग्रचित होना चाहिए, वो होता है या नहीं, होता है तो कितना समय होता है? ये चेक करने की बात है क्योंकि एकाग्रता हमारे योग की विशेषता है। जब और जहाँ हम अपने मन को लगाने चाहें, जितना समय हम मन को जिस स्टेज में ठहराने चाहें उसमें ठहरा सकें जिसको हम कहते हैं कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर। जिस समय जो लक्ष्य लेके बैठो तो जैसा वक्त वैसा काम होना चाहिए अर्थात् पढ़ने के समय पढ़ाई पढ़ो, खेलने के समय खेल खेलो। तो यह भी हमें चेक करना है कि योग माना मन एकाग्र हो और हमारा मन जितना एकाग्र रहता है उसमें विशेष प्राप्ति यह होती है कि हमारा निर्णय बहुत अच्छा होता है।

तो योग माना हमारे मन की एकाग्रता। अगर मन में प्राप्ति नहीं होती है, मानो फरिश्ते रूप में जो हल्केपन का अनुभव होना चाहिए, मन के संकल्प का भी और शरीर भान का भी हल्कापन, अगर वो नहीं होता है तो क्या हम कहेंगे कि हम

फरिश्ते के अनुभव में रहे? इसलिए योग में यह चेक करना है कि जो संकल्प में लक्ष्य लेके बैठे वो हमारा पूरा टाइम चला या योग के साथ बीच-बीच में युद्ध भी चली? चली तो उसको योग में एड नहीं करेंगे। जैसे 15 मिनट योग हुआ और 15 मिनट युद्ध हुई, तो ऐसे ही गिनती की जायेगी।

तो आत्म-अभिमानी बनके बाबा को याद करना बहुत इज़ी है, जिसे आत्म-अभिमानी बनके बाबा को याद करने की आदत नहीं होगी, उसको बाबा की याद ज्यादा समय नहीं ठहरेगी क्योंकि आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से है। तो बाबा जिस विधि से योग करने को कहते हैं, उस विधि से हमारा योग हो तो योग की शक्ति जमा हो सकेगी और अगर योग की शक्ति थोड़ी-भी कम है तो खज़ानों से भरपूरता की खुशी वा शक्ति फील नहीं होगी। युद्ध चलती रहेगी, मनन चलता रहेगा वो सब होता रहेगा लेकिन यथार्थ न होने कारण वर्तमान सन्तुष्टी नहीं होगी और भविष्य प्रालब्ध भी जमा नहीं होगी। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

"सहनशीलता के गुण को धारण करो"

1) बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा लेसन देते कि हे बच्चे, इस ज्ञान की मंजिल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा का बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण है?

2) बाबा ने कहा बच्चे दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है। ज्ञानी तू आत्मा का गुण है समान रहना। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को ज्ञानी तू आत्मा देखते माना हमारे अन्दर ड्रामा की सारी नॉलेज है। हर आत्मा के सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो की स्टेजेस की भी नॉलेज है। जब नॉलेज है तो नॉलेज की शक्ति के आधार पर समान रहने की शक्ति स्वतः ही आ जाती है।

3) जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर तूने बाल से युवा वा युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुयें होना यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है। तो हम क्यों कहें ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में वा गर्मी में दुःख क्यों देती! हम जानते हैं यह नेचर का गुण है। सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज़ करें। हम जान गये अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान। सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है। अभी तमोप्रधान है इसलिए प्रकृति पर कभी गुस्सा नहीं आता। कभी भी हम ऐसे नहीं लड़ते - ए सर्दी तू मुझे दुःख क्यों देती? किससे लड़ेगे? जब बुद्धि में आता यह तो प्रकृति का धर्म है तो उससे लड़ने नहीं जाते। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं। वह तो आयेंगी ही। मैं उससे दुःखी क्यों हूँ! जैसे प्रकृति का दुःख सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मैं उसमें क्यों लडूं! हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है।

4) कभी-कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दुःख देती तो गुस्सा क्यों नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती लेकिन मैं सोचूं कि मैने उसे कितना मान दिया है। एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मैं दाता बनूं या लेवता बनूं? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला... मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते! यह सवाल हरेक अपने से पूछे।

5) कहा जाता तू प्यार करो तो सब करें। कहते मैं तो सबको प्यार देता लेकिन आगे वाला मुझे ठुकराता। इसमें हमेशा समझो यह मेरा हिसाब-किताब है। 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करना है। जहाँ प्यार होगा वहाँ सब मान देंगे। शुभ भावना रहेगी, शुभ चिन्तन चलेगा फिर उनके लिए मेरा वरदान रहेगा। अगर मैं इस स्थिति पर रहूंगी तो सब मेरी स्तुति करेंगे। अगर मैं ही अपनी स्थिति पर नहीं रहती तो कोई भी मेरी क्या स्तुति करेगा। अच्छा। ओम् शान्ति।